मुख्तलिफ मज़मून

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नमाज की कबूलीयत की निशानी

हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मककी(रह) का इरशाद हे कि अगर एक हाजरी मे बादशाह नाराज़ हो जाये तो क्या दूसरी बार दरबार मे घुसने देगा दा, हरगिज नहीं, तो जब तुम एक मरतबा नमाज के लिये मस्जीद मे गये उस के बाद फिर तौफीक हुई तो समाज़ लो कि पहली नमाज कबूल हो गयी और तुम मकबूल हो.

सदका जहन्नम से बरात हे

हजरत आइशा(रदी) ने एक लोन्डी खरीदी, तो हजरत जिबराइल(अलै) नबी करीम صلى الله عليه وسلم की खिदमत मे

नाजिल हुए और कहा की ये मुहम्मद صلى الله عليه وسلم इस लोन्डी को अपने घर से निकाल दिज्ये क्युकी ये जहन्नमियो मे से हे,

हजरत आइशा(रदी) ने उसको घर से निकाल दिया और उन्होने कुछ थोडी सी खजूरें उस्के हवाले कर दी, चुनांचे उसने आधा खा लिया और अभी रास्ते मे ही थी की उस्के पास से एक फकीर गुजरा उसने आधी खजूरें और जो कुछ उस्के पास था सब उस फकीर को दे दिया, उस्के बाद हजरत जिबराइल(अलै) नबी करीम صلى الله عليه وسلم की खिदमत मे आये, और आप को हुकम दिया की उस लोन्डी को वापस कर लीजये, इसलिये कि वो इस सदके की वजह से जन्नतीयो मे से हो गई. (कलयूबी)

ईमान का महल दिल और इस्लाम का महल आज़्ज़ा हे

दिल ईमान की जगह हे और हाथ पैर इस्लाम की जगह हे, ईमान एक छुपी हुई चीझ हे, जो दिल मे रहता हे, और इस्लाम एक खुली हुई चीझ हे, जो हाथ पैर पर आता हे, आप ने नमाज पढी हाथ पैर से पढी तो देखने वाले जानते हे कि आप ने नमाज पढी, मगर इस काम का सर चश्मा दिल के अंदर हे, अगर इस दिल मे अकीदत, मोहब्बत और अल्लाह की

चाहत का जज्बा पेदा ना होता तो कभी नमाज ना पढते,

मालुम हुवा असल मे नमाज पढने वाला दिल हे लेकिन अमल की सुरत हाथ पैर पर जाहिर होती हे, ईमान क महल दिल हे उस्के असरात जब हाथ पैर पर जाहिर होते हे तो वो इस्लाम बन जाते हे इसलिये हदीस मे फरमाया गया हे ईमान छुपी हुई चीझ हे, जिसको दिल लिये हुवे हे, और इस्लाम खुली हुई चीझ हे जो हाथ पैर पर जाहिर होती हे. (खुत्बाते ताय्यीब)

काम मे लगने का नुस्खा

हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की(रह) फरमाया करते थे अगर रियाकारी से भी कोई अमल करता हो तो इस्को करता रहे, उस्को छोडे नहीं क्युकी शुरू शुरू मे रियाकारी होगी फिर आदत हो जायेगी, और आदत से इबादत हो जायेगी, कैसी हकीमाना तहकीक हे कि मायूसी का कहीं नामो निशान नहीं, बाज मरतबा शैतान रियाकारी का अंदेशा दिला कर सारी उमर के लिये अमल से रोक देता हे जो बडा नुक्सान हे, इसलिये अमल करो छोडो मत, इखलास की फिक्र मे इतनी ज्यादती ना होनी चाहिये काम मे लगे रहो अगर कोताही हो जाये तो इस्तिगफार से इस कमी को पूरा करलो, गरज ये कि काम मे लगो.

काम की धुन

ज्यादा ट्रैफिक वाली सडक पर किसी की दुकान हो और हर वकत इस पर शोर हो तो इस दुकानदार को कभी ये ख्याल नही आता कि जब तक शोर खत्म ना हो दुकान का काम कैसे करू, शोर के बावजूद वो अपना काम जारी रखता हे, टेलीफोन उसी हालत मे भी करता हे और सुनता भी हे, इसी तरह हर किस्म के वस्वसे आते जाते रहे जिकर और इबादत करने वाले को अपने काम की तरफ मुतवज्जा रहना चाहिये, इस शोर की तरफ ध्यान ही क्यू किया जाये, अपने काम से काम रखना चाहिये.

हर बीमारी से शिफा

नबी करीम صلى الله عليه وسلم का इरशाद हे जो शख्स बारीश का पानी लेकर उसपर सुरे फातिहा ७० बार, आयतुल कुरसी ७० बार, सुरे इख्लास ७० बार, मुअव्वजतेन कुल आउजु बीरब्बील फलक और कुल आउजु बीरब्बीन नास ७० बार,पढ कर दम करे तो, नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने कसम खाकर इरशाद फरमाया कि हजरत जिबराइल(अलै) मेरे पास तशरीफ लाये और मुझे खबर दी कि जो शख्स ऐ पानी मुसल्सल ७ दिन पीयेगा अल्लाह उस्के जिस्म से हर बीमारी दुर कर देगे, और उसे सेहत और आफीयत अता फरमायेगे

और उस्के गोशत चमडी और उसकी हड्डियो से ही नही बल्की तमाम आज्जा से तमाम बीमारिया निकाल देगे.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.